विचार बिन्दु

सच्चा गुरु अनुभव है। –स्वामी विवेकानंद

आधुनिक काबुलीवाला

ऐसी आवाजें भारत के लगभग हर गाँव की गलिओं में आज़ादी से पूर्व और उसके कुछ वर्ष पश्चात् तक बहुधा सुनाई देती थी। कौन था यह काबुलीवाला जिसके बारे में आवाजें सुनकर गांव के घरों से महिलाएं, तरुण बच्चिओं और बालक सभी उस आवाज की तरफ काबुलीवाले को देखने-मिलने को दौड़ पड़ती थी। यह काबुलीवाला कोई आश्चर्य नहीं था और न ही श्रद्धेय रविंद्रनाथ टैगोर का किताबी काबुलीवाला, जिसे लगभग हर भारतीय ने तब पढ़ा, गुना और सराहा। अंततोगत्वा श्री रविंद्र नाथ जी टैगोर तो सभी दृष्टिओं से एक विशाल व्यक्तित्व थे, गीतांजलि आदि अनेक रचनाएँ उन्होंने की और पूरी दुनियां ने तब उनके सृजन व् रचनाओं को खूब सराहा और वे विश्व उत्कृष्ट पुरष्कार 'नोबेल' से अलंकृत किये गए और इस पुरुस्कार के पाने वाले वे प्रथम भारतीय व्यक्ति बने। मैं समझता हूँ इस चोटी के साहित्यकार ने अपनी रचना 'काबुलीवाला' भी भावनात्मक दृष्टि से उच्च कोटि की बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी होगी।

आजकल के लोग तो काबुलीवाला कथानक की गहनता को समझ भी नहीं सकते। मैं तब बालक था अपने गांव में माता-पिता के घर पर ही बहन-भाईओं के साथ ही रहता था। काल होगा संभवत: 1947 से 1953-54 का, गांव में एक अफगानी व्यक्ति सामान की एक बड़ी सी गठरी लेकर आता था। गठरी में काबुलीवाला बहुधा सूखे मेवे- अखरोट, बादाम, काजू, पिस्ता, किशमिश और महिलाओं, बालिकाओं हेतु भिन्न-भिन्न वस्तुओं के आइटम लाया करता था। वह अफगानी शख्स काबुलीवाला कहलाता था।

यूरोप की तरफ जाते हुए पाकिस्तान से आगे अफगानिस्तान देश हुआ करता था। काबुल उस देश की राजधानी थी, आज भी है। भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, ईराक और मिश्र जैसे देश एक-दूसरे से सटे हुए थे। सभी जगह रहन-सहन लगभग समान सा ही था। गरीबी अपने चरम पर थी। शिक्षा और रोजगार की अत्यधिक कमी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, कोई बड़े उद्योग नहीं थे, कुटीर धंधे ही लोगों की जीविका का साधन थे। ऐसे में अफगानिस्तान भी अछूता नहीं था, आवागमन के साधन भी विकसित नहीं हुए थे। घोडा, ऊँट, सवारिओं और माल ढोनें में प्रयोग होते थे। ऊँट गाड़ियां तो घरनुमा बनती थी जो डबल डेकर होती नीचे सामान लाद लिया और सवारियां ऊपर सो जाती। बाइसकिल, मोटर साइकिल, कार, मोटर गाडी, ट्रक तब नाम मात्र को चलन में थे। नदी नहरों में नाव से आवागमन और माल परिवहन अनेक स्थानों पर पनप गया था। ऐसे समय में अफगानी लोग अपने परिवार के भरण पोषण के लिए अन्य देशों को तिजारत के लिए पलायन करते थे। भारत भी तब आर्थिक दृष्टि से कमजोर ही था। खेती में अन्न की पैदावार अच्छी नहीं थी। हाँ, जंगल चरागाह अधिक होने से पशुओं का पालना सुगम था जिससे दूध, दही, घी की प्रचुरता हर घर में रहती।

सोचिए सड़क मार्ग विकसित नहीं हुए थे रेल सुविधा भी नगण्य सी थी। ऐसी कठिन परिस्थितिओं के रहते अफगानी तिजारत के लिए घर से ऊंटों, घोड़ों पर निकलते, सामान एकत्रित करते और मुख कर लेते भारत की तरफ, जहाँ पहुंचकर उन्हें सकूंन मिलता और अपने देश जैसा सामाजिक सौहार्दपूर्ण माहौल। भाषा कोई समस्या नहीं होती। धीरे-धीरे बोली समझ आ जाती और फिर सम्बन्ध बनते तिजारत चल उठती। मुझे अपने बचपन का वो दृश्य काबुलीवाले का याद है जब वह परदेशी ग्रामीण महिलाओं, बच्चों आदि से घंटों बतियाता रहता जैसे माल बेचने की उसे कोई फिक्र ही न हो। देर होने पर फिर अपनी गठरी बाँध तेजी से चल देता दूसरे गांव ओर। पीछे बच्चे काफी देर तक उसको काबुलीवाला कह पीछा कर पुकारते रहते। दूर से ही वह दुबारा फिर आने की कह कर ओझल हो जाता।

> **भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री को हमारे उस अफगानी काबुलीवाले की बदस्थिति का आभास हो गया। और उन्होंने तत्काल अफगानिस्तान से राजनायक सम्बन्ध न होते हुए भी अफगानी पीड़ित जनता की सहायता हेतु विशाल ट्रकों में खाद्य सामग्री, दवाइयां, कपडे और अन्य जरुरत की वस्तुएं लदवा कर तत्काल अफगानिस्तान भिजवा दी। काबुल की सड़कों पर सामग्री से लदे भारतीय ट्रकों को वहां के लोगों ने देखा तो अचंभित और द्रवित हुए बिना न रह सके।**

कालांतर में न जाने क्यों दृश्य बदल गया, भागदौड़, चिल्ल्पो, अव्यवस्था भारत के परिवेश में घर कर गई। काबुलीवाला भी नहीं आया, क्या यहाँ उसे प्यार नहीं मिला, सहयोग नहीं मिला या अच्छा व्यवहार नहीं मिला, क्या हुआ किसी ने नहीं जाना और कोशिश भी नहीं की जान ने की। हम इतने खुदगर्ज निकले। काबुलीवाले की सेवा का प्रतिफल भी उसे नहीं दिया। वर्षों तक वह हमारी मांगें दूरदराज गांव तक पूरी करता रहा कभी भूला नहीं। कविवर टैगोर जी ने उसकी हृदय की धड़कन सुन ली और उसके दास्ताँ पन्नों पर उकेर काबुलीवाले को भारत भूमि पर अमर कर दिया।

फिर एक ऐसा काल खंड आया सब कुछ बदल गया। गरीब देशों की स्थितियां बदल गई। सब जगह अफरा तफरी का माहौल और राजनीति ऐसी हावी कि देश और समाज एक-दूसरे के कट्टर दुश्मन हो गए। भाई चारा, सामाजिक मेलजोल सभी तिरोहित हो गए। लगभग पचहत्तर वर्षों की लम्बी अवधि, आगा-पीछा सब कुछ भूल बैठे। अफगानिस्तान ने भी यह सब झेला और सभी अफगानी अपने संघर्ष में बहुत पिछड़ गए। नौबत अफगानी जनता की बदहाली और भूखे रहने तक की आ गई। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री को हमारे उस अफगानी काबुलीवाले की बदस्थिति का आभास हो गया। और उन्होंने तत्काल अफगानिस्तान से राजनायक सम्बन्ध न होते हुए भी अफगानी पीड़ित जनता की सहायता हेतु विशाल ट्रकों में खाद्य सामग्री, दवाइयां, कपडे और अन्य जरुरत की वस्तुएं लदवा कर तत्काल अफगानिस्तान भिजवा दी। काबुल की सड़कों पर सामग्री से लदे भारतीय ट्रकों को वहां के लोगों ने देखा तो अचंभित और द्रवित हुए बिना न रह सके। भारत के प्रधानमंत्री ने इस मदद की कोई घोषणा अथवा प्रचार नहीं किया। केवल मानवीय आधार पर उन्होंने यह कदम उठा लिया। ऐसा प्रतीत होता है हमारे मोदी जी को पुराने काबुलीवाले की याद आ गई। इस बिना कही मदद का भावनात्मक प्रभाव ऐसा हुआ कि बिना किसी पूर्व तैयारी के अफगानिस्तान या वर्तमान तालिबान का दूतावास शायद दिल्ली में खुल भी गया। हो सकता है भारत ने भी अपना दूतावास काबुल में स्थापित कर लिया हो? लेकिन पहल अफगानिस्तान ने की, या भारत ने पाठक और दोनों देशों की जनता और पूरी दुनियां आंकलन करे, जो पहले वो मीर। बहराल कुछ भी हो कुछ दशक पूर्व से टूटे पारम्परिक सम्बन्ध फिर से जुड़ गए, बिना किसी कवायद और राजनैतिक अथवा अन्य किसी प्रकार की घटना घटे और सम्बाद के। जब दिलों का मेल हो गया फिर वाकी तो औपचारिकता ही बची रहती है। आशा करते हैं यह दोस्ती भविष्य में समय के साथ दृढ से दृढ होती जाएगी। और हमें तो अपार खुशी तब होगी जब फिर से हमारे गावों में काबुलीवाला शब्द गूंजेगा। दो पुराने देशों की पारम्परिक मित्रता परवान चढ़ेगी तो दोनों पक्ष खुशहाल होंगे।

जय हो काबुली वाले, काबुली वाले साहस रखिये आप फिर उठ खड़े होंगे। हम भारतीओं की यही शुभकामनाएं।

–अतिथि सम्पादक,
प्रो.डॉ. वीर बहादुर सिंह,
(पूर्व कुलपति एवं डेयरीविज्ञ महाराणा प्रताप कृषि एवं खाद्य प्रौद्योगिकी वि.वि., उदयपुर-राज.)

राशिफल गुरूवार 30 अक्टूबर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2082, श्रवण नक्षत्र सायं 6:34 तक, शूल योग प्रात: 7:21 तक, बव करण दिन 10:07 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-मकर, मंगल-वृश्चिक, बुध-वृश्चिक, गुरू-कर्क, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग सायं 6:34 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी, गोपाष्टमी, अक्षय कुष्मांड नवमी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:02 तक, चर 10:48 से 12:10 तक, लाभ-अमृत 12:10 से 2:56 तक, शुभ 4:19 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 6:39, सूर्यास्त 5:42 तक

मेष

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मकर

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

कुंभ

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी अनबन-मतभेद हो सकते हैं। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक खर्चों पर नियंत्रण रखें।

मीन

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

पेटेंट टर्म एक्सपायरी: जेनेरिक एग्रोकेमिकल निर्माता व विपणन कंपनियों के लिए अवसर

जेनेरिक एग्रोकेमिकल की सहज जन-उपलब्धता से कृषि क्षेत्र में राहत मिलेगी!

विकास आसावत

भारत वर्ष 1995 से विश्व व्यापार संगठन का सदस्य है व इसकी बौद्धिक संपदा अधिकारों के व्यापार-संबंधी पहलुओं (ट्रिप्स) संधि के अनुसार समंब्धित घरेलु कानून को न्यूनतम मानक अनुरूप करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी बाध्यता के अंतर्गत भारत ने वर्ष 1999 से 2005 में पेटेंट काननू मे कुछ आवश्यक संसोधन कर दवा, पेट्रोकेमिकल व एग्रोकेमिकल के क्षेत्र में प्रोडक्ट पेटेंट लागू किया।

पेटेंट एक सीमित अवधि अधिकार है जो 20 वर्ष के पश्चात सार्वजनिक बन जाता है व किसी भी एग्रो कंपनी के पास पेटेंट सम्बंधित जेनेरिक प्रोडक्ट या प्रोसेस को उचित मूल्य पर बाजार व क्रेता को उपलब्ध कराने का अवसर होता है। जेनेरिक एग्रोकेमिकल मूल इन्नोवेटर निर्माता के अलावा किसी अन्य कंपनी द्वारा निर्मित और बेचा जाता है, लेकिन उसमें भी पेटेंटेड फार्मूलेशन में मौजूद एक्टिव इंग्रेडिएंट्स ही होते हैं। एग्रो केमिकल फसलों को कीटों और रोगों से बचाकर नुकसान को कम करके उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दवा और कृषि-रसायन उत्पादों से समबन्धित पेटेंट एक्ट के सेक्शन 107 ए (ए) के अनुसार जेनेरिक निर्माताओं को पेटेंट की समाप्ति से पूर्व अपने उत्पादों के लिए नियामक अनुमोदन/ट्रायल की प्रक्रिया शुरू कर सकते है, जिससे पेटेंट की समाप्ति के बाद उत्पाद को बाज़ार में न्यूनतम समय में लाया जा सके। क्लोरेंट्रानिलिप्रोल (सीटीपीआर) (अर्थरोपोडिकल अँथ्रानिलामाइड) और सीटीपीआर तैयारी की प्रक्रिया से संबंधित पेटेंट अगस्त 2022 में ही एक्सपायर हो चूका है। सीटीपीआर एक सिंथेटिक आर्गेनिक कंपाउंड है जिसका सम्बन्ध एंथ्रानिलिक डायमाइड वर्ग से है। इन पेटेंट्स के एक्सपायर होने से सक्रिय घटक सीटीपीआर युक्त कीटनाशक के जेनेरिक्स मार्किट में बहुतायत व कम कीमत पर उपलब्ध हो गए है।

ज्ञात रहे कृषि रसायनों जैसे कीटनाशक, कवकनाशक, शाकनाशक को बिक्री और वितरण के लिए आयात/निर्मित किए जाने से पहले कीटनाशक अधिनियम की धाराओं के तहत कृषि मंत्रालय के केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति के साथ पंजीकृत होना आवश्यक है। क्लोरेंट्रानिलिप्रोएल हानिकारक कीटों (जैसे दीमक, तना छेदक, फली छेदक, लीफ फोल्डर, फल भेदक) को लक्षित करता है, लेकिन लाभकारी जीवों पर हमला नहीं करता। इसलिए, यह विभिन्न फसलों जैसे धान, गोभी, गन्ना, कपास, सोयाबीन, टमाटर, बैंगन, मिर्च और विभिन्न सब्जी में पर्यावरण-अनुकूल दृष्टिकोण के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन कार्यक्रमों के लिए उपयुक्त है।

इसी वर्ष दिसंबर माह में सीटीपीआर के निर्माण से संबंधित "एन- फेनिलपाइराज़ोल- 1-कार्बोक्सामाइड्स तैयार करने की विधि" के लिए प्रक्रिया पेटेंट भी अपना टर्म पूरा कर रहा है व उसके बाद इसके पब्लिक डोमेन में आने से इस विधि का उपयोग कोई भी निर्माता बिना किसी अनुमति व लाइसेंस के व्यावसायिक निर्माण और विक्रय कर सकेगा।

सीटीपीआर को विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों के रूप में तैयार किया जाता है, जिनमें ग्रैन्यूल्स, वेटेबल पाउडर और सस्पेंशन कंसन्ट्रेट शामिल हैं। जेनेरिक विनिर्माण के साथ ही भारतीय कृषि रसायन कंपनियां अपनी अनुसंधान एवं विकास क्षमताओं और उत्पाद मिश्रण में नए फॉर्मूलेशन पेश करने पर तेजी से ध्यान केंद्रित कर रही हैं। इस सम्बन्ध में सीएसआईआर-भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान, भारत सरकार का ऑफ-पेटेंट/जेनेरिक के लिए कृषि रसायन प्रक्रियाओं और प्रौद्योगिकियों के लिए एकीकृत अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम एक प्रगतिशीत कदम है।

वही हालिया रुझान के अनुसार बायो पेस्टिसाइड के क्षेत्र में कम्पनीज द्वारा पेटेंट फाइलिंग का रुझान देखने को मिल रहा है। बैसिलस थुरिंगिएन्सिस, ट्राइकोडर्मा, स्यूडोमोनास, मेटारिज़ियम, ब्यूवेरिया और अन्य जैसे जैव कीटनाशक स्थायी फसल संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में, लगभग 20 सूक्ष्मजीव जैव कीटनाशकों के रूप में पंजीकृत हैं, जिन्हें कवक, बैक्टीरिया और वायरस में वर्गीकृत किया गया है।

हमारे देश के निर्माता पेटेंट टर्म पूरा कर चुके कृषि और रासायनिक उत्पादों के जेनेरिक्स का निर्माण अत्यंत कम लागत पर करने में सक्षम है जिसके कारण ये छोटे और सीमांत किसानों के लिए बेहद उपयोगी हैं। साथ ही इनका निर्माण भारत में होने से विभिन्न प्रकार के कुशल और अर्ध-कुशल पेशेवरों व कार्मिको के लिए रोज़गार के सुअवसर उपलब्ध होता है व हमारे आत्मनिर्भर भारत और मेक इन इंडिया पहल को बल मिलता हैं। एग्रो केमिकल जेनेरिक्स का बड़ा स्टॉक निर्यात योग्य होता है जिससे मूल्यवान विदेशी मुद्रा का भी अर्जन होता है व इकॉनमी को ट्रेड सरप्लस मिलता है।

जैसा की विदित है के आने वाले वर्षो में में कई महत्वपूर्ण एग्रो केमिकल्स के पेटेंट टर्म पूरे होने को है जिससे इनके किफायती व गुणवत्तायुक्त जेनेरिक वर्जन को मार्केट में उतरने का मौका मिलेगा जो निर्माता के साथ साथ जनता विशेषकर कृषक के लिए हितकारी है। सम्बंधित उद्योग निकट भविष्य में पेटेंट टर्म पूरा करने वाले कृषि रसायनो की घटको व विनिर्माण विधि सम्बंधित जानकारी जुटा के सही समय पर विस्तृत बायो-एफिकैसी व फील्ड ट्रायल को प्राथमिकता दे ताकि पेटेंट समाप्ति के बाद एग्रो केमिकल्स का जेनेरिक वर्जन जल्द से जल्द उपलब्ध हो।

–विकास आसावत,
पेटेंट अटॉर्नी एवं एडवोकेट

ट्रंप के मुकाबले मारिया को "नोबेल", नोबेल समिति का दुनिया को संदेश

सुरेंद्रसिंह शेखावत

नोबेल पुरस्कार की 124 वर्षों की समृद्ध परंपरा में कई ऐसी घटनाएं दर्ज हैं जब विश्व के दिग्गजों ने शांति के इस सर्वोच्च सम्मान को प्राप्त करने के लिए अप्रत्यक्ष रूप से प्रयास किए। लेकिन अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का हालिया गिड़गिड़ाना निश्चित रूप से एक अनोखा अध्याय जोड़ता है। 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा के ठीक पहले ट्रंप ने सोशल मीडिया से लेकर कूटनीतिक मंचों तक अपनी लॉबीइंग को चरम पर पहुंचा दिया था।

एक्स पर दर्जनों पोस्ट, सहयोगी देशों के नेताओं से फोन कॉल्स और यहां तक कि व्हाइट हाउस के आधिकारिक बयानों में मध्य पूर्व शांति समझौतों का बार-बार जिक्र, यह सब एक हाई-वोल्टेज ड्रामे की तरह लगा। लेकिन नॉर्वेजियन नोबेल समिति ने इस शोर-शराबे को ठुकराते हुए वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना माचाडो को सम्मानित करने का फैसला किया। यह निर्णय न केवल ट्रंप की महत्वाकांक्षा को आईना दिखाता है, बल्कि वैश्विक शांति की परिभाषा को भी नई दिशा देता है।

ट्रंप का नोबेल अभियान कोई नई बात नहीं है। 2018 में ही उन्होंने अब्राहम समझौतों के बाद खुद को शांति का वास्तुकार घोषित कर दिया था। लेकिन 2025 में, जब वह दूसरे कार्यकाल में लौटे, तो यह अभियान एक व्यक्तिगत जुनून में बदल गया। जुलाई 2024 के चुनावी विजय के बाद ट्रंप ने तत्काल मध्य पूर्व, यूक्रेन और ताइवान जैसे मुद्दों पर ट्रंप डील की घोषणा की। अगस्त में उन्होंने सार्वजनिक रूप से कहा, "मैंने दुनिया को युद्धों से बचाया है, नोबेल समिति को अब समय आ गया है कि वह सच्चाई को पहचाने।" सितंबर तक, उनके समर्थक इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू और सऊदी क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने पत्र लिखकर समिति से अपील की। ट्रंप ने खुद एक्स पर पोस्ट किया, "नोबेल? यह मेरा हक है! दुनिया देख रही है।" यह गिड़गिड़ाना न केवल अमेरिकी राष्ट्रपति की गरिमा को ठेस पहुंचाता है, बल्कि शांति पुरस्कार की पवित्रता पर भी सवाल खड़े करता है।

क्या ट्रंप का दावा जायज था? निश्चित रूप से, उनके कार्यकाल में अब्राहम समझौते एक मील का पत्थर थे। संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, सूडान और मोरक्को के साथ इजरायल के सामान्यीकरण ने मध्य पूर्व में एक नई हवा का संचार किया। यूक्रेन युद्ध में उनकी तत्काल समाप्ति की धमकी ने रूस को वार्ता की मेज पर ला खड़ा किया। लेकिन नोबेल समिति का मूल्यांकन सतही उपलब्धियों पर नहीं, बल्कि दीर्घकालिक शांति पर आधारित होता है। ट्रंप की नीतियां-जैसे ईरान पर अधिकतम दबाव, अफगानिस्तान से अचानक विदाई, और अमेरिका फर्स्ट का सिद्धांत-ने अस्थिरता को बढ़ावा दिया। ईरान का परमाणु समझौता तोड़ना, जो ओबामा युग की विरासत था, ने क्षेत्रीय तनाव को भड़काया। अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी ने मानवीय संकट को जन्म दिया। ट्रंप का ड्रामा इन विफलताओं को छिपाने का प्रयास लगता है। नोबेल इतिहासकारों का मानना है कि अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत में भाईचारे की भ्रातृभावना का उल्लेख है, जो व्यक्तिगत महिमामंडन के विपरीत है। ट्रंप का अभियान इसी भाईचारे को बाजारू बनाता प्रतीत होता है।

दूसरी ओर, मारिया कोरिना माचाडो का चयन नोबेल समिति की साहसी दृष्टि का प्रतीक है। वेनेजुएला की इस 56 वर्षीय अर्थशास्त्री और विपक्षी नेता ने निकोलस मादुरो के तानाशाही शासन के खिलाफ एक अथक संघर्ष छेड़ा है। 2014 से वे गिरफ्तारी, निर्वासन और राजनीतिक उत्पीड़न का शिकार रहीं। जुलाई 2024 के राष्ट्रपति चुनाव में, जहां मादुरो ने धांधली से सत्ता हथियाई, माचाडो ने लाखों वेनेजुएलावासियों को सड़कों पर उतार दिया। उनकी डेमोक्रेटिक रेसिस्टेंस आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को जागृत किया, जिसके फलस्वरूप अमेरिका, यूरोपीय संघ और लैटिन अमेरिकी देशों ने मादुरो पर प्रतिबंध लगाए।

माचाडो का संघर्ष शांति का एक अनूठा रूप है-यह सशस्त्र विद्रोह नहीं, बल्कि अहिंसक प्रतिरोध है। उन्होंने कहा है, "शांति तानाशाहों की दया पर नहीं, लोकतंत्र की जीत पर टिकी है।" नोबेल समिति ने उन्हें सम्मानित करते हुए कहा कि यह पुरस्कार "दमित आवाजों के लिए एक संदेश है, जो तानाशाही के खिलाफ खड़े होते हैं।"

यह निर्णय वेनेजुएला के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है। तेल-समृद्ध यह देश 2013 से आर्थिक तबाही, भुखमरी और मानवीय संकट से जूझ रहा है। मादुरो का शासन, जो ह्यूगो शावेज की विरासत पर टिका है, ने 75 लाख से अधिक शरणार्थियों को जन्म दिया। माचाडो का चयन न केवल वेनेजुएला को वैश्विक पटल पर लाता है, बल्कि लैटिन अमेरिका के उभरते लोकतांत्रिक आंदोलनों को प्रेरित करता है। ब्राजील की लूला सरकार और कोलंबिया के गुतिरेज जैसे नेता पहले ही बधाई दे चुके हैं। लेकिन ट्रंप का अभियान इस संदर्भ में विडंबनापूर्ण है। ट्रंप ने मादुरो को सामान्य कहकर संबोधित किया था, लेकिन 2025 में उन्होंने वेनेजुएला पर नए प्रतिबंध लगाए। क्या उनका नोबेल दावा वेनेजुएला जैसे संकटों को हल करने का था, या मात्र प्रचार? माचाडो का पुरस्कार ट्रंप को याद दिलाता है कि शांति डील्स से नहीं, बल्कि पीड़ितों के संघर्ष से उपजती है।

इस घटना के व्यापक निहितार्थ वैश्विक नेतृत्व की प्रकृति पर सवाल उठाते हैं। ट्रंप युग में अमेरिकी विदेश नीति ट्रांजेक्शनल हो गई जो सौदेबाजी पर आधारित है। लेकिन नोबेल शांति पुरस्कार, जो मार्टिन लूथर किंग जूनियर, मलाला यूसुफजई और दलाई लामा जैसे व्यक्तियों को मिला मूल्यों पर टिका है। ट्रंप का गिड़गिड़ाना पॉपुलिस्ट नेताओं की एक प्रवृत्ति को उजागर करता है-जो व्यक्तिगत ब्रांडिंग को राष्ट्रीय हितों पर तरजीह देते हैं। क्या यह लोकतंत्र के लिए खतरा है? हां, क्योंकि जब राष्ट्राध्यक्ष पुरस्कारों के पीछे भागते हैं, तो वे जनता की अपेक्षाओं को भुला देते हैं। नोबेल समिति का ना कहना एक स्वस्थ लोकतांत्रिक सुधार है। यह दर्शाता है कि ओस्लो की छोटी-सी समिति अब भी शक्ति के गलियारों से ऊपर है।

वेनेजुएला के परिप्रेक्ष्य से देखें तो माचाडो का पुरस्कार एक मोड़ है। मादुरो ने घोषणा के बाद इसे यांकी साजिश करार दिया, लेकिन यह उनकी कमजोरी को उजागर करता है। माचाडो ने कहा, "यह पुरस्कार मेरे लिए नहीं, वेनेजुएला के 2.8 करोड़ लोगों के लिए है।" अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ेगा, और शायद 2026 के चुनावों में लोकतंत्र की बहाली संभव हो। ट्रंप की लॉबीइंग ने अनजाने में इस मुद्दे को वैश्विक मंच पर ला दिया, जो एक सकारात्मक सह-उत्पाद है।

अंत में, यह घटना नोबेल की आत्मा को पुनर्जीवित करती है। 1901 में पहला शांति पुरस्कार हेनरी डुनेंट को मिला, जिन्होंने व्यक्तिगत रूप से घायलों की सेवा की। ट्रंप का ड्रामा आधुनिक राजनीति की चकाचौंध है, जबकि माचाडो का संघर्ष नोबेल की मूल भावना है-अहिंसा, न्याय और मानवता। 124 वर्षों में पहली बार एक राष्ट्रपति का ऐसा अपमान शायद आवश्यक था, ताकि हम याद रखें कि शांति कोई पुरस्कार नहीं, बल्कि एक निरंतर संघर्ष है। ट्रंप को इससे सीखना चाहिए-महत्वाकांक्षा की जगह विनम्रता लाए। दुनिया यह जाने कि सच्ची शांति सड़कों पर, निर्वासितों के बीच जन्म लेती है, न कि व्हाइट हाउस के कॉन्फ्रेंस रूम में। यदि नोबेल समिति ने ट्रंप को चुना होता, तो यह पुरस्कार की गरिमा को धूमिल करता; लेकिन माचाडो का चयन इसे चमकाता है।

–सुरेंद्रसिंह शेखावत,
बीकानेर (लेखक राजनीतिक कार्यकर्ता और स्वतंत्र टिप्पणीकार है)

विद्यार्थियों में छिपी प्रतिभा को उभारने का कार्य करें विश्वविद्यालय : राज्यपाल बागड़े

■ राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय में स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर का लोकार्पण

कोटा, (निसं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि सभी विद्यार्थियों में विशिष्ट प्रतिभा एवं कौशल होता है, जिसे प्रोत्साहन मिलने पर विद्यार्थी अपनी कला का प्रदर्शन कर देश एवं दुनिया में नाम रोशन करते हैं। उनके भीतर छुपे कौशल को उभारने के प्रयास विश्वविद्यालयों को करना चाहिए। उन्होंने कहा कि नवनिर्मित स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर भी विद्यार्थियों में सृजनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देते हुए नवाचारों के केन्द्र के रूप में अपनी अलग पहचान कायम करेगा। इस सेंटर के माध्यम से विद्यार्थी अपने भीतर छुपी हुई प्रतिभा एवं गुणों को निखार सकेंगे। राज्यपाल बागड़े बुधवार को राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा में नवनिर्मित स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर के लोकार्पण के बाद मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। राज्यपाल ने कहा कि प्रैक्टिकल ज्ञान के अभाव में डिग्री का कोई उपयोग नहीं है, इसलिए, विद्यार्थी केवल पाठ्य पुस्तक पढ़कर डिग्री हासिल करने की अपेक्षा व्यावहारिक एवं प्रैक्टिकल ज्ञान प्राप्त करने पर अधिक ध्यान दें।

कोटा आरटीयू में राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने स्टूडेन्ट्स एक्टिविटी सेंटर का लोकार्पण किया।

उन्होंने कहा कि इस सेंटर के माध्यम से विद्यार्थी के कला-कौशल में इतना निखार लाया जाए कि वे विद्यार्थी बाहर जाकर राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय की अलग पहचान कायम करें। उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि विद्यार्थियों में विशेष स्किल को निखारने में यह सेंटर उपयोगी साबित होगा। उन्होंने नवनिर्मित सेंटर के उद्घाटन के लिए सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। राज्यपाल बागड़े ने सभी विद्यार्थियों का आह्वान किया कि आगे बढ़कर राष्ट्र एवं समाज के निर्माण में योगदान दें।

कार्यक्रम के अति विशिष्ट अतिथि एवं उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने कहा कि राज्य सरकार की प्राथमिकता युवाओं को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान कर उनमें कौशल विकसित करना है। हमारे तकनीकी विश्वविद्यालय इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। शिक्षा में अब केवल पाठ्यपुस्तक एवं कक्षा-कक्ष तक सीमित नहीं रहकर विद्यार्थी को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया जा रहा है। डॉ.बैरवा ने उपस्थित लोगों से स्वदेशी को अपनाकर देश को विश्वगुरु बनाने का आह्वान किया। इससे पहले राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो.निमित चौधरी ने राज्यपाल एवं अन्य अतिथियों का स्वागत करते हुए विश्वविद्यालय का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि नया स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर 8 करोड़ रुपए की लागत से 2633 वर्गमीटर में निर्मित किया गया है। उन्होंने बताया कि इस सेंटर में विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाएगा।

लोकार्पण कार्यक्रम में शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर, कोटा दक्षिण विधायक संदीप शर्मा, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलगुरु प्रो. कैलाश सोढानी, कोटा विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. बी.पी. सारस्वत, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. बी.एल. वर्मा, कृषि विश्वविद्यालय की कुलगुरु डॉ. विमला डूंगवाल सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आरटीयू की कुलसचिव भावना शर्मा ने कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर राज्यपाल बागड़े एवं उप मुख्यमंत्री डॉ.बैरवा सहित अन्य अतिथियों ने स्टूडेंट एक्टिविटी सेंटर परिसर में पौधारोपण भी किया।